सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़-17

इन्सानो रब को पहचानो

जमाअत इस्लामी हिन्द
दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
नई दिल्ली-110025

9810032508, 9650022638 www.islamsabkeliye.com
www.youtube.com/truepathoflife

'अल्लाह कृपाशील, दयावान के नाम से'

इन्सानो रब को पहचानो

हम दुनिया में रहते-बसते, चलते-फिरते, खाते-पीते और अन्य क्रियाकलाप करते हैं, मगर क्या कभी हमने सोचा कि यह दुनिया आख़िर है क्या?इसे किसने और क्यों बनाया? इसकी व्यवस्था कैसे चल रही है? जीवन क्या है? इसका वास्तविक उद्देश्य क्या है? इन्सान इस लोक में किस लिए आया? मृत्यु-पश्चात उसे कहां जाना है? इस सृष्टि के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? इस लोक में बसनेवाले लोगों के साथ वह किस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित करे? इन्सान को सच्ची ख़ुशी और सच्चा आनन्द कैसे मिल सकता है? इन्सान की सफलता और असफलता वास्तव में किस चीज़ पर निर्भर करती है? इस जगत के स्रष्टा के साथ उसका क्या सम्बन्ध है? ये कुछ उभरे हुए प्रश्न हैं। इन पर विचार करना और इनके उत्तर खोजना प्रत्येक इन्सान के लिए आवश्यक है।

जब तक इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर न मिल जाएं, तब तक इन्सान की दशा एक ऐसे यात्री की तरह है, जिसे अपनी मंज़िल का पता नहीं है, जो निरुद्देश्य दर-दर भटक रहा है।

सोच में अगंभीरता

आम तौर पर जीवन के उपरोक्त मौलिक प्रश्नों को लोग गंभीरता से नहीं लेते और वे अपनी शक्ति और समय उन चीज़ों में लगाते हैं, जिनसे उन्हें अस्थायी और क्षणिक सांसारिक लाभ मिलता रहे और लोगों में उनकी प्रतिष्ठा बनी रहे। वास्तव में वे अपने आपको और अपने साथ दूसरे लोगों को भी धोखे में रखना चाहते हैं। लेकिन धोखा, धोखा ही है, चाहे वह अपने आपको दिया जाए या किसी और को। इससे न तो जीवन में सच्चाई, अच्छाई और गहराई आ सकती है और न ही सच्ची ख़ुशी और वास्तविक आनन्द एवं शान्ति मिल सकती है। ये चीज़ें सुदृढ़ विश्वास, सच्चे ज्ञान और ईशपरायणता से मिल सकती हैं। इसलिए जब तक

इन्सान को जीवन और जीवन के वास्तविक उद्देश्यों का ज्ञान न हो तब तक न तो उसके विचार उच्च हो सकते हैं और न ही उसका हृदय उदार और विशाल हो सकता है, और न ही संकीर्णता, लोलुपता, उपभोक्तावाद, अपसंस्कृति, पक्षपात्, घृणा, वैमनस्यता, अंधविश्वास, छल-कपट, अन्याय, अत्याचार, शोषण और दमन के चक्र को रोका जा सकता है। न ही भ्रष्टाचार, चोरी-डकैती, ग़बन, बलात्कार तथा सामूहिक बलात्कार, हत्या, आत्महत्या, अपहरण, उपद्रव, कन्या भ्रूण- हत्या, रिश्वत, कालाबाज़ारी, खाद्य व पेय पदार्थों में मिलावट आदि का उन्मूलन किया जा सकता है। यह बात दिन-प्रतिदिन के अनुभव से भी सिद्ध होती है। सुधार के सारे प्रयत्न हमेशा असफल ही होते रहे हैं।

ईशभयविहीन मानव के हृदय में दानवता का वास हो जाता है। यह ईशभयहीनता एवं अपने रब और पालनहार को न पहचानने ही का अपरिहार्य परिणाम है कि आज प्रायः हर जगह दानवीय प्रवृत्ति के लोग नैतिक और मानवीय मूल्यों को बड़ी क्रूरता के साथ अपने पैरों से कुचल रहे हैं। आज हम प्रतिभाहीन होकर रह गए हैं और हमारी मानवता खो गई है। फलतः हम बहुत-सी जटिल समस्याओं के जाल में फंस गए हैं और अपने जीवन को सार्थक और अर्थमय नहीं बना सके हैं।

जीवन-उद्देश्य का निर्धारण

जीवन के महान उद्देश्य के निर्धारण और उसके व्यावहारिक प्रदर्शन द्वारा इन्सान इस जाल से बाहर निकल सकता है। जीवन का महान उद्देश्य ही इन्सान को इन्सान बना सकता है, महान बना सकता है। वह महान उद्देश्य हैः अपने रब (प्रभु) को पहचानना, उसके आदेश पर स्वयं चलना और दूसरों को चलाना और उसके साथ किसी को साझी न ठहराना। इसी से उसके जीवन में सुख-शान्ति की बहार आ सकती है। अतः जब तक इन्सान इस महान उद्देश्य की ओर अग्रसर नहीं होता, समस्याएं बनी रहेंगी, बल्कि बढ़ती और जटिल होती जाएंगी।

यह एक बड़ी विडम्बना है कि विज्ञान के नियम को तो लोग प्रायः मान लेते हैं, लेकिन एकेश्वरवादी शाश्वत सत्य धर्म के नियमों को, जो परम विज्ञान है, जो सार्वभौम और अत्यन्त व्यापक है, को मानने से कतरा रहे हैं। यदि धर्म को विशुद्ध ईशोन्मुखी करके इसके लिए सार्वभौमिकता और व्यापकता को अनिवार्य माना जाए तो इसमें अनेकता और विविधता की कोई संभावना नहीं रह जाती। वैश्वीय भाईचारा स्थापित हो सकता है और समाज की अनेक छोटी व बड़ी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

विशुद्ध एकेश्वरवाद

ईश्वर एक है, केवल एक। निश्चित रूप से एक। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसकी कोई प्रतिमा व मूर्ति नहीं। किन्तु यह कितने दुख की बात है कि इन्सानों में अनेक मत-मतान्तर प्रचलित हो गए हैं और लोग यह नहीं समझते कि इससे धर्म के विशेष गुण—उसकी व्यापकता तथा एकत्व को आघात पहुंचा है। अधिकतर इन्सानों का वैचारिक धरातल इतना निम्न हो गया है कि वे मत-मतान्तरों में खोए हुए हैं। उनको यह चिन्ता नहीं है कि धर्म के वास्तविक रूप को समझें और सभी इन्सानों को एक ईश्वर के मार्ग पर लाने का प्रयास करें। अज्ञानता दूर करें और इन्सानों को इन्सानों की ग़ुलामी (दासता) से आज़ाद कराकर एक ईश्वर का भक्त और बन्दा बनाएं। सच यह है कि जब मानवजाति 'एक' है और उसका स्रष्टा, स्वामी, प्रभु भी 'एक' ही है तो सारे मानवों का धर्म और मार्ग भी 'एक' ही हो सकता है तथा उसी मार्ग पर चलकर हम सब 'एक' हो सकते हैं।

ईश-मार्गदर्शन

सर्वशक्तिमान, दयावान और कृपाशील ईश्वर ने सारे इन्सानों का मार्गदर्शन किया है। इसलिए उसके दिखाए हुए मार्ग से उत्तम कोई मार्ग हो ही नहीं सकता और न ही उसकी शिक्षाओं के मुक़ाबले में कोई और

शिक्षा कल्याणकारी, मंगलकारी, हितकारी और लोक-परलोक को संवारनेवाली हो सकती है।

ईशदूतों की भूमिका

ईश्वर की ओर से सन्देशवाहक अथवा पैग़म्बर तथा ऋषि-मुनि इतिहास के अनेक चरणों में आते रहे हैं और इन्सानों को सच्चे धर्म की शिक्षा देकर उनके मन की भ्रान्तियों को दूर करते एवं उन्हें सीधा मार्ग दिखाते रहे हैं। दुनिया सदैव उनकी आभारी रहेगी। पैग़म्बरी (ईशदूतत्व) के सिलसिले की आख़िरी कड़ी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰*) हैं। आपने पिछले तमाम ईशदूतों और उनकी लाई हुई शिक्षाओं की पुष्टि की, लेकिन उन शिक्षाओं में जो विकार और बिगाड़ उत्पन्न कर दिया गया था और इसके कारण लोगों में विचार एवं धारणा की जो ख़राबियां पैदा हो गई थीं एवं व्यावहारिक जीवन में जो ज़ुल्म व अत्याचार फैल गया था, उन सबके विरोध में आवाज़ उठाई और बताया कि लोगो! तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम अंधकार और अज्ञान को छोड़कर अपने रब को पहचानो और उसी के मार्ग पर चलो।

एकेश्वरवाद से विमुखता

लेकिन कितने अफ़सोस और आश्चर्य की बात है कि इन्सान अपने पैदा करनेवाले को भुलाकर या उससे बेगाना (निस्पृह) होकर दूसरों को उपास्य बना बैठा है। उसने अपनी कल्पनाओं के सहारे ईश्वर की सत्ता और प्रभुता में अनेक साझीदार शामिल कर लिए हैं। यह भी देखने में आता है कि ईश्वर ने जो चीज़ें स्वयं बनाई हैं, उनको ही पूजनीय और आराध्य समझ लिया जाता है और उन्हें बनाने एवं पैदा करनेवाले की ओर रुजू नहीं किया जाता, उसकी पूजा और उपासना नहीं की जाती, जबकि पूजा, उपासना और आज्ञापालन का वास्तविक अधिकारी वही है। यह ईश्वर के प्रति कृतघ्नता है कि उसे छोड़कर दूसरों को उपास्य बनाया जाए। जो इन्सान को पैदा करे, उसके लिए अनेकानेक चीज़ों की व्यवस्था करे, उसे रोज़ी दे, उसे सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ जीव बनाए,

---

*(सल्ल॰) : सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अर्थात् उन पर अल्लाह की रहमत (दयालुता) और सलामती हो।

फिर भी यदि इन्सान अपने पालनहार को न पहचाने और उसकी पूजा-उपासना न करे, उससे विमुख हो जाए, उसके प्रति आभार न प्रकट करे, तो न वह अपने पैदा करनेवाले पूज्य-प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है और न ही वह अपने जीवन को सफल बना सकता है।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इन्सानों को जो मार्ग दिखाया वह कोई नया नहीं, बल्कि आदिकाल से ही एकमात्र सच्चा मार्ग रहा है और भविष्य में भी उसके अतिरिक्त कोई और सत्य मार्ग नहीं। आपका प्रमुख संदेश यही रहा है कि—

''इन्सानो रब को पहचानो।''

आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम अपने रब को पहचानें, क्योंकि—

वही हमारा स्रष्टा है। पूज्य प्रभु है, पालनहार है। वही हम सबका रब है और हम सब उसके, मात्र उसी के दास व उपासक हैं। वह बड़ा ही उदार है। वही आजीविकादाता है। वही परलोक में न्याय के दिन का मालिक है। वही सर्वोत्तम सहायक व संरक्षक है। वही सर्वशक्तिमान है और केवल वही उपास्य है।

पवित्र क़ुरआन के शब्दों में—

''हुक्म और आधिपत्य तो बस ईश्वर का है। उसने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी का दास न बना जाए। यही सीधा और सत्य धर्म है।''

(क़ुरआन 12:40)

ईश्वर ही जीवन-यात्रा की अस्ल मंज़िल

ईश्वर ही हमारी जीवन-यात्रा की मंज़िल (मूल गंतव्य स्थान) है। हमें अन्ततः उसी के पास पहुंचना है। यदि हम उसके बताए हुए मार्ग पर चलेंगे, तो स्वर्ग में हमें सफल व अमर जीवन प्राप्त होगा, जहां न कोई कष्ट व शोक होगा और न कोई भय। ईश्वर के सामीप्य में हमें वह सब कुछ प्राप्त होगा, जिसकी हम कामना करते हैं। वहां कामना की भी कामना पूरी होगी, वहां वह अमृत-वर्षा होगी, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर

सकते। किन्तु प्रभु की यह कृपा उन्हीं लोगों पर होगी, जो उसके कृपा-पात्र होंगे, नेक और भले होंगे। अतः हमें अपने वर्तमान जीवन से अपनी पात्रता का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा। इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी यही है। यह अपने जीवन के साथ दुर्व्यवहार है कि आदमी उससे उसका सौन्दर्य और उसकी गरिमा छीन ले और भोग-विलास एवं मर्यादाहीन जीवन ही को सब कुछ समझ बैठे एवं अपने प्रभु की अपार कृपा और उसके सामीप्य से अपने आपको वंचित करके नरक की धधकती हुई आग में जा पड़े। स्पष्ट है, कोई भी इन्सान यह नहीं चाहेगा।

ईशमार्ग का अर्थ

ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आदमी संसार को छोड़कर जंगल में चला जाए और न इसका अर्थ यह होता है कि आदमी अपनी लौकिक ज़िम्मेदारियों को भूल जाए। ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह है कि लोक और परलोक दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए सत्य- मार्ग पर अग्रसर हुआ जाए। इसलिए अपने रब को पहचान लेने से हमें वह ज्ञान, शक्ति और पथ प्राप्त होता है, जिसका साधारणतया अनुमान भी नहीं किया जा सकता। अपने रब को पहचानने वाला व्यक्ति चरित्रवान होगा, सच्चा होगा और हर प्रकार की संकुचित दृष्टि से मुक्त होगा। उसका हृदय इतना विशाल होगा कि वह सारे संसार के हित के लिए सोच सके और जगत् के सारे लोगों को समान दृष्टि से देख सके। सबके लिए उसके दिल में करुणा, दया और प्रेम हो। वह इसके लिए विकल हो कि काश! सारा संसार अपने रब को पहचानता और अपने जीवन में बदलाव लाकर उसके मार्ग पर चलता।

क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में यह शिक्षा दी गई कि—

"(लोगों के साथ) उपकार कर, जिस प्रकार अल्लाह ने तेरे साथ उपकार किया है, और धरती में बिगाड़ पैदा करने की कोशिश न कर। अल्लाह बिगाड़ पैदा करनेवालों को पसन्द नहीं करता।"

(क़ुरआन 28:77)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इस्लाम की ईश्वरीय शिक्षाओं के अनुपालन में जिस आदर्श समाज का निर्माण किया था, वह हर प्रकार की बुराई, पापकर्म और विकार व भ्रष्टता से मुक्त था।

ऐसे समाज की आवश्यकता आज भी है, आगे भी रहेगी। ईशदूत ने जिस आदर्श समाज का निर्माण किया था उसकी रूप-रेखा कहानियों में नहीं, इतिहास के पन्नों में सुरक्षित आज भी स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है। वह एक 'सम्पूर्ण क्रान्ति' थी जो **''इन्सानो! रब को पहचानो''** के आह्वान को तात्कालिक समाज के द्वारा स्वीकृत हो जाने पर आई थी। यह क्रान्ति आज भी आ सकती है। ऐसे पूर्ण परिवर्तन और सर्वांगीण क्रान्ति की हम सबको आवश्यकता भी है और अभिलाषा भी। तो फिर : आओ! इन्सानो अपने रब को पहचानो!

रब को पहचानने का तक़ाज़ा यह है कि—

- हम जीवन के रहस्य को समझें। अपने रब (प्रभु) के आदेशों का शुद्ध हृदय से पालन करें, अपने हृदय को शुष्क न रहने दें, उसमें प्रेम जगाएं।
- प्रभु से हमारा प्रेम का संबन्ध हो और प्रभु के बन्दों तथा अन्य जीवधारियों के प्रति हमारे हृदय में सहानुभूति और करुणा हो।
- हम कहीं भी और कभी भी छल-कपट से काम न लें।
- संसार से हर प्रकार के ज़ुल्म व अत्याचार और शोषण को समाप्त करें, क्योंकि ईश्वर अत्याचार को पसन्द नहीं करता।
- हमारी नीति यह हो कि सबको समान रूप से आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हों, क्योंकि हर व्यक्ति प्रभु का बन्दा है।
- हर प्रकार के भेदभाव को मिटाएं और लोगों को इससे अवगत कराएं कि महान वह है, जो ईश्वर से डरता है और उसके दिखाए हुए मार्ग पर चलता है, चाहे वह किसी भी रूप-रंग का हो, किसी भी देश अथवा प्रदेश का निवासी हो और कोई भी भाषा बोलने वाला हो।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
dawah.jih@gmail.com